Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी
अध्याय 10
भय - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जीवन-परिचय

उत्तर- हिन्दी साहित्य में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। इनका जन्म सन् 1886 ई. में हुआ। आचार्य शुक्ल को हिन्दी का सर्वोत्कृष्ट गद्यकार माना जाता है। हिन्दी साहित्य के इतिहस को सुव्यवस्थित करने में इनका विशिष्ट योगदान रहा है। साथ ही विविध प्रकार के श्रेष्ठ निबन्ध लिखने और उच्चस्तरीय समीक्षा प्रस्तुत करने में इन्हें समर्थ आलोचक एवं विचारक माना जाता है। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' तथा 'रस मीमांसा' इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। 'चिन्तामणि' (भाग एक व दो) नामक ग्रन्थ में इनके मनोविकारों को लेकर लिखे गये उत्कृष्ट निबन्ध संकलित हैं। इनके इन निबन्धों में मन और बुद्धि का अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है। इन्होंने "हिन्दी शब्द-सागर ', 'भ्रमरगीत सार', 'जायसी ग्रन्थावली ', /तुलसा साहित्य आदि विविध ग्रन्थों का सम्पादन किया। इनके निबन्ध 'सरस्वती' एवं 'आनन्द कादम्बिनी' आदि पत्रिकाओं में छपते थे। 'चिन्तामणि' (भाग एक) पर शुक्ल जी को 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' प्राप्त हुआ है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. दुःख या आपत्ति का पूर्ण निश्चय न होने पर कौन-सा मनोभाव उत्पन्न होता है?

(क) भय
(ख) क्रोध
(ग) लज्जा
(घ) आशंका
उत्तर: (क)

प्रश्न 2. "कल तुम्हारे हाथ-पाँव टूट जाएँगे " ऐसा वाक्य सुनकर क्या अनुभूत होगा?

(क) क्रोध
(ख) निराशा
(ग) भय
(घ) उत्साह
उत्तर: (ग)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. साहसी व्यक्ति कठिनाई में फँस जाने पर क्या करता है?

उत्तर: साहसी व्यक्ति कठिनाई में फंस जाने पर उससे बचने का उपाय करता है। डरता नहीं है।

प्रश्न 2. भय क्या है?

उत्तर: किसी भावी संकट का आभास होने और स्वयं में उससे बचने की सामर्थ्य न देखकर जो मनोविकार मनुष्य के मन में पैदा होता है, उसको भय कहते हैं।

प्रश्न 3. क्रोध और भय में क्या अन्तर है?

उत्तर: क्रोध के लिए भय कारक का ज्ञान होना आवश्यक है किन्तु भय के लिए इतना जानना ही बहुत है कि संकट आएगा अथवा हानि होगी।

प्रश्न 4. भय भीरुता में कब बदल जाता है?

उत्तर: भय भीरुता में तब बदल जाता है जब वह व्यक्ति का स्वभाव बन जाता है।

प्रश्न 5. ऐसी कौन-सी भीरुता है, जिसकी प्रशंसा होती है?

उत्तर: धर्मभीरुता ही एकमात्र ऐसी भीरुता जिसकी प्रशंसा होती है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. आशंका और भय में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: दुःख या आपत्ति की पूर्ण निश्चय न रहने पर उसकी संभावना मात्र के अनुमान से जो आवेग-शून्य भय होता है, उसे आशंका कहते हैं।

किसी भावी आपत्ति की भावना अथवा दुःख के कारण का पता चलने पर मन में उत्पन्न होने वाले आवेगपूर्ण अथवा स्तम्भकारक मनोविकार को भय कहते हैं।

प्रश्न 2. व्यापारी द्वारा नया व्यापार शुरू न करने , पण्डित का शास्त्रार्थ में भाग न लेने का मूल कारण क्या हो सकता है?

उत्तर: आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार धन हानि के भय से व्यापारी किसी विशेष व्यवसाय में हाथ नहीं डालते तथा परास्त होने के भय से पंडित भी कभी-कभी शास्त्रार्थ से मुंह चुराते हैं। इसका का मूल कारण भीरुता है।

प्रश्न 3. भय की अधिकता किसमें रहती है?

उत्तर: भय की अधिकता जंगली और असभ्य जातियों में अधिक होती है। वे जिससे भयभीत होते हैं उसी को श्रेष्ठ मानते हैं और उसकी स्तुति करते हैं। किसी आपती या दुःख से बचे रहने के लिए ही अधिकतर वे देवी देवता की पूजा करते हैं। लेखक के अनुसार भय की अधिकता चलने फिरने वाले बालकों तथा पशुओं में भी होती है।

प्रश्न 4. सभ्य और असभ्य प्राणियों के भय में क्या अन्तर है?

उत्तर: सभ्य और असभ्य प्राणियों के भय में काफी अंतर होता है। असभ्य प्राणी जिसे जानते पहचानते नहीं है उनसे भयभीत रहते हैं और उसी को श्रेष्ठ मान लेते हैं जबकि सभ्य प्राणियों का भय अलग तरह का होता है। वे इस बात से भयभीत रहते हैं कि कहीं कोई जालसाज उनकी संपत्ति ना हड़प ले। कोई उन्हें किसी झूठे मुकदमे में ना फसा दे। सभ्य प्राणी भयभीत नहीं होते बल्कि भय के निवारण का उपाय खोजते हैं।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. दुःख की छाया को हटाने के लिए व्यक्ति किन बलों का उपयोग करता है? और कैसे?

उत्तर: प्रत्येक व्यक्ति होश सँभालते ही अपने चहूं ओर दुःखपूर्ण संसार पाता है। इसको क्रमशः अपने ज्ञान-बल से तथा कुछ बाहुबल से सुखमय बनाता है। अनेक दुख पूर्ण भयजनित परिस्थितियों का सामना करके वह अपना हृदय मजबूत बनाता है। जैसे जैसे वह जीवन में आगे बढ़ता है वैसे वैसे भीरुता से दूर होता जाता है। क्लेश और बाधा को वह जीवन का सामान्य हिस्सा तथा सुख को उसका अपवाद समझता है। धीरे-धीरे मनुष्य की आयु बढ़ती है और उसके ज्ञान तथा शारीरिक शक्ति की वृद्धि होती है। उसके परिचय-क्षेत्र का विस्तार होता है तथा उसके ज्ञान की भी वृद्धि होती है। पहले वह अपने माता-पिता के सम्पर्क में आता है तथा धीरे-धीरे परिवार तथा बहुत से लोग उसके सामने प्रतिदिन आते हैं। वह जान लेता है कि ये लोग उसको सुख पहुँचाएँगे , दुःख नहीं देंगे। धीरे-धीरे उसकी झिझक खुलती जाती है। उसका ज्ञान बढ़ता जाता है। उसका आत्मबल तथा शारीरिक बल भी बढ़ता जाता है। तब वह दुःख से मुक्त होने के लिए तथा सुख पाने के लिए उनका उपयोग करता है।

अपने आस-पास के लोगों , पशुओं, विश्वासों आदि से दु:खी होने का जो भय उसके मन में रहता है वह धीरे-धीरे दूर होता है। वह ज्ञानबल , हृदयबल और शारीरिक बल की वृद्धि के साथ दुख की छाया को हटाता चलता है।

प्रश्न 2. "सभ्यता से अन्तर केवल इतना पड़ा है कि दुःख-दान की विधियाँ बहुत गूढ़ और जटिल हो गई है।" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्राचीन काल में जब शिक्षा-सभ्यता का पूरा प्रसार नहीं हुआ था , तब लोग भूत-प्रेतों से भयभीत होते थे और जंगली हिंसक पशुओं से आत्मरक्षा के लिए हमेशा सावधान रहते थे। आधुनिक काल में सभ्यता का अत्यधिक प्रसार होने से , ज्ञानबल बढ़ जाने से भूत-प्रेत और पशुओं का भय समाप्त हो गया है, परन्तु अब मनुष्य के भय तथा दुःख कारण मनुष्य ही है। आज का सभ्य मानव किस गोपनीय तरीके से दूसरों को दुःख देता है तथा किस विधि से दूसरों को भयभीत करता है यह अतीव गूढ़ और जटिल हो गया है। क्योंकि तथाकथित सभ्यता के आवरण में उसने दूसरों को दुःख पहुंचने के नये-नये तरीके अपना लिए हैं। झूठे गवाह पेश करके मुकदमा जीतना, कानून की आड़ में दूसरों की सम्पति हरथियाना, कमजोर लोगों से उनके खेत , बाग-बगीचे, घर तथा रुपये-पैसे जबरदस्ती छीन लेना , गरीबों का शोषण कर अपना घर भरना तथा मिलावटी-कालाबाजारी का धंधा करना आदि ऐसी कई विधियाँ आज प्रचलित हैं, जिनसे परोक्ष इसे दूसरों को पहुँचाया जाता है।

प्रश्न 3. भय के माध्य और असाध्य दोनों रूपों की सोदाहरण समझाइए।

उत्तर- आचार्य शुक्ल ने बताया है कि भी विषय दो रूपों में सामने आता है- असाध्य रूप में और साध्य रूप में। जो प्रयत्न द्वारा दूर किया जा सके , यह साध्य रूप है। जैसे किसी पहाड़ी नदी के किनारे दो मनुष्य बैठे या आनन्द से कर रहे थे , तभी सामने से शेर की दहाड़ सुनाई पड़ी। उस समय वे दोनों व्यक्ति प्रयास करके छिपने, भागने या पेड़ से भय को साध्य बना सकते हैं। जिस भय के कारण का निवारण प्रयत्न करने पर भी न किया जा सके, असंभव हो, वह असाध्य रूप है। जैसे दोनों आदमियों में से एक हो भागने में या पेड़ पर चढ़ने में समर्थ था और शीघ्र पेड़ पर चढ़ गया। लेकिन दूसरा पंगु था इस कारण से प्रयत्न करने पर भी स्वयं को शेर के आतंक से मुक्त नहीं कर सका। तब अपनी अक्षमता से भय से घिरा रहा। इस कारण उसकी स्थिति भय असाध्य रूप बन जाती है।

प्रश्न 4. मनुष्य के भय की वासना का परिहार कैसे होता है?

उत्तरः मनुष्य के भय की वासना का परिहार क्रम से पता चलता है। जैसे जैसे वह संसार के विभिन्न रूपों से व्यस्त होता है विविधताओं का अनुभव कर लेता है। वैसे वैसे उसकी भय या हानि होने की आशंकाएं एवं धड़कन मिटती रहती है। वह बुद्धि का विकास करता है। हृदय में उन स्थितियों के संदर्भ में मंथन करता है तथा शरीर को तदनुरूप समर्थ बनाता है। इस प्रकार मनुष्य अपने ज्ञानबल हृदयबल शरीर बल की वृद्धि से भय के कारणों को समाप्त करता चलता है। प्राचीन काल से मानव सभ्यता के उत्तरोत्तर विकास का यही क्रम रहा है आज से एक हजार वर्ष पहले जिस मार्ग पर चलने में मानव को हिंसक पशुओं के आक्रमण का भय रहता था वहां आज अच्छी सड़क तथा आबादी हो जाने से भय का निवारण स्वतः हो गया है। इस प्रकार वर्तमान काल में मानव सभ्यता के विकास से भय की वासना का परिहार हो जाता है।

प्रश्न 5. निर्भरता के लिए शुक्लजी ने क्या उपाय बताइए हैं?

उत्तरः सुख और दुख मानव जीवन के दो पक्ष है। मनुष्य अपने जीवन के कर्म क्षेत्र में जिस प्रकार सुख पाने के लिए प्रयास करता है उसी प्रकार वह दुख के आतंक से मुक्त होने तथा निर्भय रहने के लिए पूरा प्रयास करता है। अतः निर्भयता प्रयत्न साध्य है। निर्भयता के संपादन के लिए शुक्ल जी ने दो बातें अपेक्षित बताई है जो कि उनके उपाय भी हैं। पहला उपाय यह है कि दूसरों को हमसे किसी प्रकार का भय या कष्ट न हो इसके लिए हम अपने शील तथा उत्कृष्ट आचरण से लोगों के मन से आशंका दूर कर दें। उन्हें भय या आतंक से से मुक्त रखे। दूसरा उपाय यह है कि कोई हमें भय या कष्ट पहुंचाने का साहस न करे। इसके लिए हम अपनी शक्ति और पुरुषार्थ का प्रदर्शन करें तथा दूसरों को यह अच्छी तरह से जता दें कि हम आसानी से डरने वाले नहीं है। इन दो उपायों से व्यक्ति निर्भय रह सकता है। वैसे यह सारे उपाय तो सज्जन प्रवृत्ति के लोगों में ही कारगर हो सकते हैं दर्जन तो इसकी भी परवाह नहीं करते हैं।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg